देखभाल का शिक्षणशास्त्र: एक नवाचार

डॉ.मंजुल त्रिवेदी* रश्मि त्रिपाठी **

* सहायक आचार्य (बी.एस.एन.वी.पी.जी.कॉलेज) शिक्षाशास्त्र विभाग, लखनऊ

**शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

Article History:

Received: 15-08-2025

Accepted: 12-09-2025

Published: 30-09-2025

Keywords:

देखभाल का शिक्षणशास्त्र, सामाजिक-भावनात्मक कल्याण, तदनुभूति, नैतिक निर्णय, अवसाद\ तनाव, शिक्षक शिक्षा

Page No.: 209-215

Article code: V2025024

Access online at: https://veethika.co.in

Source of support: Nil

Conflict of interest: None declared

Published By: Pt. R.S.T.M. Society, Lucknow, India

Corresponding Author:

रश्मि त्रिपाठी

शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

Email: rashmi.tripathi84@gmail.com

शोध-सार

देखभाल का शिक्षणशास्त्र, शिक्षा जगत के लिए एक नया विचार है जो नेल नोडिंग्स की देखभाल की शिक्षा पर आधारित है। देखभाल की शिक्षा की सबसे बड़ी देन यह है कि यह पूर्णतया व्यावहारिक है, सैद्धांतिक नहीं | व्यवहारिक ज्ञान सदैव चरित्र निर्माण में सहायक होता है क्योंकि उसमें व्यक्तित्व के तीनों पक्ष (ज्ञानात्मक, भावात्मक,व मनोगत्यात्मक) सक्रिय होते हैं। यह शिक्षा के समग्र दृष्टिकोण पर आधारित है। देखभाल का शिक्षणशास्त्र अभ्यास पर बल देता है। यह शिक्षण की एक ऐसी विधि है जिसमें छात्र कल्याण को ध्यान में रखा जाता है ताकि आज का युवा तनावग्रस्त स्थिति से उबर सके क्योंकि आज की सबसे प्रबल समस्या छात्रों का तनावग्रस्त होना है। प्रस्तुत लेख में देखभाल की शिक्षा व देखभाल का शिक्षणशास्त्र का विस्तृत अध्ययन करते हुए यह जानने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार देखभाल का शिक्षणशास्त्र छात्रों का समग्र विकास करते हुए उनके सामाजिक-भावनात्मक कल्याण व उन्हें एक अच्छा शिक्षक बनाने में सहायक है।

प्रस्तावना-

देखभाल की शिक्षा एक सार्वभौमिक आवश्यकता है क्योंकि शिक्षा द्वारा ऐसे छात्र और युवा तैयार किये जा रहे हैं जो देश के आर्थिक विकास में बढ़-चढ़कर योगदान दे रहे हैं किंतु साथ ही सामाजिक -भावात्मक -नैतिक विकास में पीछे भी हो रहे हैं । आज के मोबाइल युग में बालक इतना आत्म केंद्रित होता जा रहा है कि उसे अपने पास बैठे व्यक्ति की ही जरूरत या तकलीफ का अंदाजा नहीं है और ऐसे में हम बात करते हैं वैश्वीकरण व वसुधैव कुटुंबकम की । आज के युग में अब कुटुंब में ही कौटुम्बिक भावना नहीं रही तो वसुधैव कुटुंबकम की अवधारणा विकसित कर पाना एक दिवा स्वप्न जैसा है । कुटुंब का आधार ही भावनात्मक लगाव है जिसका सर्वथा अभाव देखने को मिलता है । इस संकल्पना को जीवित रखने व बनाए रखने के लिए एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति के प्रति लगाव व आत्मानुभूति की भावना का होना परम आवश्यक है यह आत्मानुभूति की भावना केवल **देखभाल की शिक्षा** व शिक्षण द्वारा ही विकसित की जा सकती है । इसलिए वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के सामने यह बहुत बड़ी चुनौती आ चुकी है कि भावनात्मक व नैतिक विकास पर बौद्धिक विकास से कम नहीं बल्कि अधिक ध्यान दिया जाये । विज्ञान ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तो बना लिया लेकिन **स्नेह, दर्द, पीड़ा, देखभाल व लगाव** जैसी भावनाओं का विकल्प अभी भी तैयार नहीं हो पाया है अतः देखभाल के शिक्षण द्वारा इन चुनौतियों का समाधान करते हुए छात्रों में सामाजिक-भावनात्मक-नैतिक विकास व निर्णय क्षमता का विकास किया जा सकता है । देखभाल शिक्षणशास्त्र द्वारा ही भविष्य के लिये ऐसे शिक्षक तैयार किये जा सकते हैं जो छात्रों में एक समग्र मानव का निर्माण कर सके ।

शोध की आवश्यकता एवं प्रासंगिकता- वर्तमान जीवन शैली व शिक्षा व्यवस्था दोनों ही छात्रों पर अनावश्यक भार आरोपित कर रही है जिसमें बिना अपनी क्षमताओं व रुचि का आकलन किये सब एक ही दौड़ में भागते चले जा रहे हैं परिणाम अवसाद, असफलता और निराशा | **मैकमूलन, बुज़ेल्ली एवं यून, (2015) मारिया व लेस्कोआर्ट, (2022) एवं बाली, (2015)** ने अपने शोध पत्रों में प्रकाश डालते हुए बताया कि किस प्रकार केयर पेडागोजी छात्रों के वेल बीइंग व मानसिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है साथ ही **मैकगिल, (2016), रेबिन, (2008) एवं लेंग, (2010)** ने अपने अध्ययन में देखभाल शिक्षण व शिक्षा का विद्यालयों में प्रयोग व उसकी उपयोगिता पर प्रकाश डाला है | इन सभी अध्ययनों से यह स्पष्ट है कि अभी तक इस विषय में देश के बाहर ही शोध कार्य हो रहे है जबकि केयर एजुकेशन व पेडागोजी पर अध्ययन व शोध की आवश्यकता भारत में भी है अतः इसकी प्रासंगिकता व आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता द्वारा इस विषय को प्रस्तुत शोध पत्र के लिए चुना गया|

उद्देश्य

1. देखभाल की नैतिकता सिद्धांत पर आधारित **देखभाल की शिक्षा** का विस्तार से अध्यन करना |
2. देखभाल शिक्षण शास्त्र के संप्रत्यय का विस्तृत अध्यन करना |
3. देखभाल के शिक्षण शास्त्र का शिक्षक शिक्षा में योगदान सुनिश्चित करना|

शोध प्रश्न-

1- देखभाल की शिक्षा से क्या तात्पर्य है?

2- देखभाल का शिक्षण शास्त्र क्या है? एवं यह किन सिद्धांतों पर आधारित है

3- क्या देखभाल के शिक्षण शास्त्र का शिक्षा व शिक्षक शिक्षा में कोई योगदान हो सकता है?

शोध विधि- प्रस्तुत शोधपत्र हेतु विभिन्न शोधपत्रों व पुस्तको की साहित्यसमीक्षा व विषयवस्तु विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया है |

पृष्ठभूमि- देखभाल शिक्षण (केयर पेडागॉजी) देखभाल की शिक्षा पर आधारित एक नवीन संप्रत्यय है। देखभाल की नैतिकता जिसकी प्रधान प्रवर्तक **केरोल गिलीगन एवं नेल नोडिंग्स** हैं । वस्तुत: केरोल गिलगिन ने यह सिद्धांत कोहलबर्ग के नैतिक

सिद्धांत के विरोध में प्रतिपादित किया क्योंकि कोहलबर्ग के नैतिक विकास सिद्धांत में महिलाओं की आवाज को नजरअंदाज किया गया था परिणाम स्वरुप गिलीगंन ने **1982** में प्रकाशित अपनी पुस्तक **इन ए डिफरेंट वॉइस** में नैतिकता का स्त्री वादी पक्ष उजागर किया जिसमें उन्होंने बताया कि नैतिकता के प्रति स्त्रियों का दृष्टिकोण पुरुषों से भिन्न है पुरुष जहां नैतिकता को अधिकारों, कानून और सार्वभौमिक रूप से लागू सिद्धांत के रूप में देखते हैं वही स्त्रियां नैतिकता को रिश्तों, करुणा व दूसरों के प्रति जिम्मेदारी के रूप में देखती हैं **।** गिलिगन के इसी विचार से प्रभावित होकर नेल नोडिंग्स ने देखभाल की नैतिकता सिद्धांत का शिक्षा में प्रयोग किया इस प्रकार **देखभाल की शिक्षा (केयर एजुकेशन)** का संप्रत्यय अस्तित्व में आया।

देखभाल की शिक्षा (केयर एजुकेशन) का अर्थ- देखभाल की शिक्षा, शिक्षा के क्षेत्र में एक नवाचार है जो यह मानता है कि नैतिक विकास का आधार देखभाल है। नैतिक विकास के बीज बाल्य काल में ही आरोपित किए जाने चाहिए तभी भविष्य में वे बालक के चारित्रिक निर्माण में योगदान दे सकेंगे। देखभाल के द्वारा ही छात्रों में सही व गलत की समझ विकसित करके नैतिक निर्णय लेने में उन्हें सक्षम बनाया जा सकता है **अधिकारी, साहा और सेन, (2023)**। यह एक संबंध केंद्रित शिक्षा है जिसका प्रारंभ घर से होता है किंतु नोडिंग इसे विद्यालय तक लाने की आवश्यकता बताती हैं। नेल नोडिंग्स जॉन डीवी से भी प्रभावित थी और वह जॉन डीवी समिति की अध्यक्ष भी रहीं तो उनके अनुसार शिक्षा ऐसी हो जो बालक को सही और गलत का निर्णय लेने में सक्षम बनाए व समाज के लिए तैयार करें और इस शिक्षा का आधार देखभाल होगा **ब्रोस्ट्रोम, (2006)** अर्थात **छात्र को एक मशीन ना बनाकर एक संवेदनशील व्यक्ति बनाना ही शिक्षा का उद्देश्य है।**

नोडिंग्स का कहना है कि इसके दो प्रमुख घटक हैं **देखभाल कर्ता और देखभाल प्राप्त कर्ता**। देखभाल की शिक्षा इन दोनों के बीच की अंतः क्रिया और उससे विकसित होने वाले संबंधों की बात करती है। देखभाल की शिक्षा एक पारस्परिक क्रिया या अनुभूति है जो बालक के सामाजिक –भावात्मक- नैतिक विकास में सहायक है।

देखभाल की शिक्षा के चरण – देखभाल की शिक्षा का कक्षा में अनुप्रयोग निम्न चरणों द्वारा किया जा सकता है यही चरण देखभाल शिक्षण (केयर पेडागॉजी) के लिये आधार बनते हैं।

1-मॉडलिंग

2--डायलॉग(वार्ता)

3- -प्रैक्टिस (अभ्यास)

4--कन्फर्मेशन (पुष्टिकरण)

Figure 1
Model of Care Theory

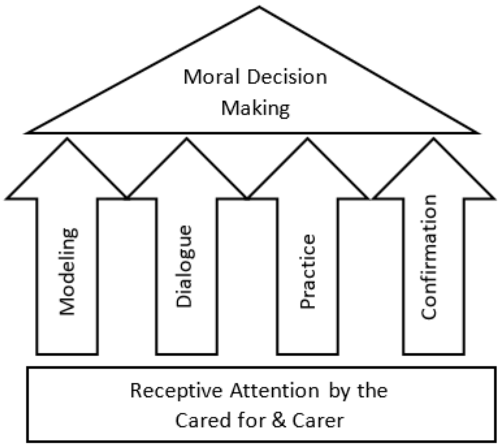

स्रोत- https://images.app.goo.gl/eonELCB9sfjWq5Rx7

शिक्षक जब अपने व्यहार में इन चरणों का प्रयोग करता है तभी देखभाल शिक्षण शास्त्र एक नवाचार के रूप में शिक्षण प्रक्रिया में जन्म लेता है।

देखभाल का शिक्षण शास्त्र: देखभाल का शिक्षण शास्त्र शिक्षण का एक ऐसा उपागम है जो देखभाल और उसकी शिक्षा पर आधारित है | शिक्षा स्वयं में देखभाल आधारित क्रिया है जिसका उद्देश्य छात्रों की देखभाल करना है साथ ही साथ उनके सामाजिक -आध्यात्मिक -भावात्मक विकास में योगदान देना है। देखभाल शिक्षण शास्त्र के दो आधारभूत स्तंभ है नैतिकता और देखभाल। यह शिक्षक छात्र संबंधों की प्रकृति को समझने पर बल देता है **नोडिंग्स, (2013)** जैसे विद्वान शिक्षक को देखभाल के एक मूर्त अभ्यास के रूप में परिभाषित करते हैं। यह पारस्परिक सम्मान और प्रामाणिक संवाद के अभ्यास पर केंद्रित है यह एक छात्र केंद्रित उपागम है।

देखभाल का शिक्षण शास्त्र छात्रों की भावनात्मक व सामाजिक भलाई को ध्यान में रखते हुए इस विचारधारा पर आधारित है की देखभाल शिक्षण शिक्षक की एक नैतिक आवश्यकता एवं जिम्मेदारी है **कोलारिक व टेजिन्सका, (2022)**। यह शिक्षण शास्त्र सबसे पहले छात्र को एक व्यक्ति के रूप में पहचानता है और उसके अनुभवों को स्वीकार करता है | इसमें उन लोगों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है जिनकी देखभाल की जा रही है अर्थात छात्र साथ ही उन लोगों पर भी जो देखभाल कर रहे हैं अर्थात शिक्षक| अतः देखभाल करने वाले और देखभाल पाने वाले दोनों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। देखभाल शिक्षण शास्त्र में छात्र शिक्षक संबंध में पारस्परिकता एक महत्वपूर्ण घटक है जिसमें छात्र शिक्षक के साथ पारस्परिक वार्तालापों में संलग्न होकर अपने व छात्र दोनों के भावनात्मक विकास में सहयोग देता है |

देखभाल के शिक्षण शास्त्र का महत्व-

देखभाल शिक्षण पद्धति छात्र कल्याण पर प्रकाश डालती है यह (केयर पेडागोजी) विद्यार्थी की सोशल -इमोशनल वेलबींइग पर आधारित है। यह पहचानता है कि छात्र किस तरह से वर्तमान समाज, व समस्याओं से जूझ रहा है, जो उसे तनाव दे रहे हैं | आज के छात्र बहुत शीघ्र ही अवसाद से ग्रसित हो जाते हैं अतः इन सब बातो को ध्यान में रखते हुए यह शिक्षण शास्त्र छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को दूर करने में सहायक है। देखभाल आधारित शिक्षण यह सुनिश्चित करता है कि छात्रों के बीच पाठ्यक्रम के तनाव को कैसे कम किया जाए ? यह छात्र शिक्षक संबंधों को सम्मानजनक व सकारात्मक बनाने में सहायक है। इस प्रकार यह एक सहायक व समावेशी शिक्षक दृष्टिकोण का विकास करता है | इसके द्वारा शिक्षक एक ईश्वर तुल्य कोई व्यक्तित्व नहीं है जिसकी हर बात मानना छात्र का दायित्व होता है वरन यहां पर छात्र को भी पूरी स्वतंत्रता होती है कि वह भी अपनी भावनाओं को शिक्षक के सामने रख सके और शिक्षक, अगर वह देखभालुपूर्ण शिक्षण शास्त्र को अपना रहा है तो यह उसकी जिम्मेदारी है कि वह उसकी भावनाओं का स्वागत करें ,स्वीकार करें और तद -अनुभूति के तहत उसकी उन भावनाओं को समझने और उसकी सम्स्याओं का समाधान करने में सहायता करें **मोर्टारी, (2016)**।

शिक्षक शिक्षा में देखभाल शिक्षण-

शिक्षक शिक्षा सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था का आधार स्तंभ है शिक्षक शिक्षा के द्वारा जिस प्रकार के शिक्षक तैयार किए जाएंगे वैसे ही छात्र तैयार होंगे अतः शिक्षक शिक्षा में देखभाल शिक्षण को एक शिक्षण शास्त्र के रूप में प्रयोग करना शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में एक नई पहल होगी क्योंकि केयर पेडगॉजी (देखभालुपूर्ण शिक्षण शास्त्र) वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में हो रही चूक पर प्रकाश डालती हैं साथ ही साथ छात्रों के भावनात्मक और सामाजिक कल्याण की बात करती है | इसके द्वारा शिक्षक के नैतिक व भावनात्मक विकास पर ध्यान दिया जा सकता है | शिक्षक शिक्षा में देखभाल शिक्षा शास्त्र यह सुनिश्चित करता है कि भविष्य के शिक्षक न केवल ज्ञानवान हो बल्कि वह छात्रों की जरूरत के प्रति दयालु और उत्तरदाई भी हो साथ ही साथ वह छात्रों के साथ करुणामय पारस्परिक संबंध स्थापित करने में सक्षम हो **राबिन, (2008)**।

देखभाल शिक्षण शास्त्र के सिद्धांत-

- **शिक्षक छात्र संबंध बनाना-** देखभालपूर्ण शिक्षण शास्त्र संबंधपरक शिक्षण विधा है जिसमें शिक्षक –छात्र संबंध की अहम भूमिका है। इसमें छात्रों के साथ विश्वास व सहानुभूति विकसित करने के लिये शिक्षकों को प्रोत्साहित किया जाता है **मोर्टारी, (2016)** |
- **सामाजिक -भावनात्मक शिक्षा** – शिक्षकों को आत्म- जागरुकता, सहानुभूति व भावनात्मकता को शिक्षणविधि के रूप में प्रयोग के लिये प्रशिक्षित करना।
- **तनाव प्रबंधन पर बल -** देखभालपूर्ण शिक्षण शास्त्र तनाव प्रबंधन पर आधारित है इसमें शिक्षक समूह चर्चाओं कार्य विभाजन व प्रोत्साहन विधियों का प्रयोग करके व छात्रो को भावनात्मक प्रबंधन में सक्षम बना सकता है इस प्रकार यह तनाव प्रबंधन में साहयता करती है |
- **सांस्कृतिक रूप से उत्तरदाई शिक्षक-** कक्षा में विभिन्न सांस्कृतिक परिवेश के छात्र आते हैं तो शिक्षक का दायित्व है कि वह सभी बच्चों से एक सा व्यवहार करे।
- **छात्र केंद्रित शिक्षा** – देखभाल शिक्षण, छात्र केंद्रित उपागम है जिसमे छात्रों की आवश्यकताओं, भावनाओं व विश्ववास को केंद्र में रखा जाता है।
- **नैतिक निर्णय लेना-** भावी शिक्षकों को छात्रों की भलाई को प्राथमिकता देने वाले निर्णय लेने के लिये प्रोत्साहित करना।

देखभाल शिक्षण शास्त्र के गुण -देखभाल शिक्षण कुछ महत्वपूर्ण गुणों पर आधारित है –

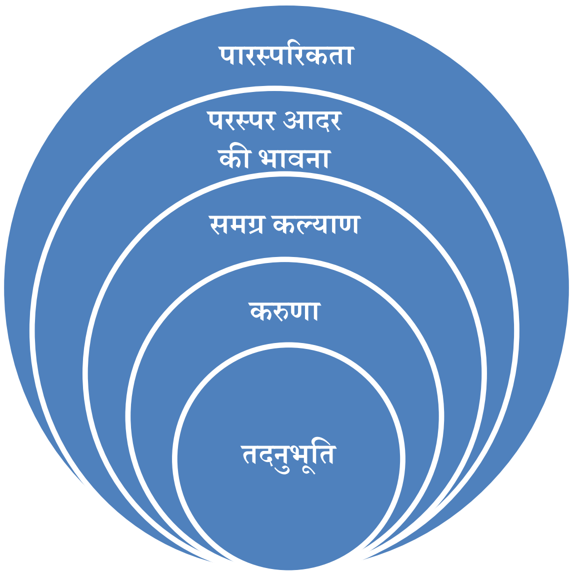

- **तदनुभूति या(एंपैथी)** - छात्रों के अनुभवों एवं उनके विचारों को वैसे ही अनुभव करना जैसा कि वह महसूस कर रहे हो| उनके अनुभवों को पहचानना और उनकी भावनात्मक आवश्यकताओं को स्वीकार करते हुए उन्हें समझने की कोशिश करना|
- **करुणा (कंपैशन**)-इसके अंतर्गत छात्रों के प्रदर्शन और उनकी भलाई के प्रति चिंतित होना आता है अर्थात इसमें शिक्षक छात्रों की परफॉर्मेंस को ध्यान में रखते हुए उनके लिए क्या अच्छा है और क्या नहीं, क्या बातें है जो उनकी भावनाओं को आहत करेंगीं इस बारे में चिंतित होना है। उनके साथ विनम्र रहना ही वास्कतव में करुणा है।

- **समग्र कल्याण** -यह शिक्षण शास्त्र छात्रों के समग्र कल्याण पर ध्यान देता है सिर्फ मानसिक विकास या शारीरिक विकास ही शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य नहीं है वरन देखभाल शिक्षण शास्त्र को अपनाने वाले शिक्षकों का या शैक्षिक घटकों का यह मानना है कि छात्रों की सामाजिक, मनोवैज्ञानिक एवं भावनात्मक आवश्यकताओं पर भी ध्यान दिया जाए तभी हम एक संपूर्ण व्यक्तित्व या एक छात्र के समग्र कल्याण की बात कर सकते हैं और शिक्षा का परम उद्देश्य ही है एक संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास व छात्रों का कल्याण।
- **परस्पर आदर की भावना (म्युचुअल रेस्पेक्ट)-** इस शिक्षण शास्त्र की सबसे विशिष्ट बात यह है कि यह छात्र केंद्रित है और इसमें परस्पर आदर की भावना महत्वपूर्ण है | छात्र शिक्षक के प्रति अगर आदर की भावना रखता है तो शिक्षक भी छात्र के प्रति आदर की भावना रखेगा। इस तरीके से दोनों के बीच में एक ऐसा संबंध विकसित होता है जिसमें छात्र पूरी तरह से स्वतंत्र होता है अपनी समस्याओं, विचारों और अपनी बातों को शिक्षक के सामने रखने और परस्पर वार्तालाप के द्वारा उसका समाधान ढूंढने में।
- **पारस्परिकता (रेसिप्रोसिटी)-** पारस्परिकता कहीं ना कहीं परस्पर आदर की भावना और समग्र कल्याण से मिलता हुआ गुण है | इसमें शिक्षक व छात्र के बीच प्रमाणिक वार्तालाप को स्थान दिया जाता है जिसके द्वारा उनके बीच एक देखभालुपूर्ण संबंध का विकास होता है जिसमें वह एक दूसरे के प्रति जिम्मेदार होते हैं | पारस्परिकता पर आधारित यह एक शिक्षण अभ्यास है, जहां शिक्षक देखभाल करने की भूमिका निभाते हैं और उन्हीं को देखकर आगे छात्र भी देखभाल करना सीखते हैं। इस तरीके से एक पारस्परिक भावना का विकास होता है कि देखभाल पाना ही हमारा अधिकार नहीं है वरन अगर हम पा रहे हैं तो उसको लौटना भी हमारा कर्तव्य है।

देखभाल शिक्षण शास्त्र या केयर पेडागोजी का शिक्षा में योगदान- -

- देखभाल शिक्षण छात्रों को उनकी विषय-वस्तु, शिक्षक और विद्यालय परिसर से अधिक से अधिक संबंधित करता है **वेलस्कुएज़, वेस्ट, ग्राहम एवं ओस्गुथोर्पे, (2013)**।
- उन्हें उस माहौल में रहकर कुछ सीखने के लिए तत्पर करता है। इसके द्वारा छात्र ज्यादा या अधिक सुरक्षित व सपोर्टेड अनुभव करते हैं **सोटो, (2005)** ।
- इसके द्वारा जो शिक्षक हैं वह पारंपरिक शिक्षक की अपेक्षा अधिक वास्तविक एवं प्रतिक्रियात्मक अधिगम वातावरण का निर्माण कर सकते हैं **शिन, (2015)** ।
- इसके द्वारा छात्रों में आत्मविश्वास की वृद्धि की जा सकती है।
- देखभाल शिक्षण शास्त्र के द्वारा छात्र शिक्षक संबंधों में सुधार लाया जा सकता है।
- देखभाल शिक्षण शास्त्र के द्वारा छात्रों और शिक्षक में एक दूसरे की भावनाओं को समझने की समझ विकसित की जा सकती है।
- इसके द्वारा छात्र अधिक स्वतंत्रता का अनुभव करते हैं।
- इसके द्वारा छात्रों के सामाजिक भावनात्मक कल्याण का विकास करते हुए समाज को जिम्मेदार नागरिक प्रदान किये जा सकते हैं **मैकगिल, (2016)**|
- यह छात्रों में अवसाद और तनावों से जूझने की शक्ति का विकास करने में सक्षम है **मैकमुलेन,बुज़्ज़ेल्ली एवं यून, (2015)** ।
- यह छात्रों को नैतिक निर्णय लेने में सक्षम बनाती है।
- नैतिक व दार्शनिक शिक्षक तैयार करना **रेबिन, (2008)** ।

- समावेशी शिक्षा को बढावा।
- नैतिक व मूल्य आधारित शिक्षा पर बल।
- सीखने के लिये अनुकूल वातावरण प्रदान करना।

निष्कर्ष

शिक्षा व शिक्षण आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है तथा देखभाल शिक्षणशास्त्र के द्वारा ऐसे शिक्षक तैयार किये जा सकते हैं जो वर्तमान मोबाइल युग में बालक के भावनात्मक विकास में अहम भूमिका निभा सकते हैं क्योंकि इसमें शिक्षा के उस पक्ष पर ज्यादा जोर दिया गया है जो अब तक उपेक्षित रहा है। नेल ने विद्यालयी शिक्षा में देखभाल की शिक्षा के सुझाव द्वारा बालक के **सामाजिक-भावात्मक-नैतिक विकास** पर बल दिया है। यह लक्ष्य देखभाल शिक्षणशास्त्र द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। अत: देखभाल शिक्षणशास्त्र न केवल छात्रों के कल्याण वरन शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में भी बहुत उपयोगी व प्रासंगिक नवाचार है।

संदर्भ सूची--

ग्रीर,एस.के. (2023). 'ए पेडागोजी ऑफ केयर फॉर इनफॉरमेशन लिटरेसी एंड मेटा लिटरेसी असिंक्रोनस ऑनलाइन इंस्ट्रक्शन. द *जर्नल ऑफ़ एकेडमिक लाइब्रेरियनशिप, 49(3).* पुनरप्राप्त **https://www.sciencedirect.com/science/article/pii/S0099133323000150**

मोर्टारी, एल. (2016). फॉर ए पेडागोजी ऑफ केयर. *फिलासफी स्टडी, 6* (8), 455-463.

मैकगिल, बी. (2016). ए पैराडाइम शिफ्ट इन एजुकेशन: पेडागोजी, स्टैंडपोइंट एंड एथिक्स ऑफ केयर. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ पेडागोजीज एंड लर्निंग, 11*(3). 238-247.

राबिन, सी. (2008). कंस्ट्रक्टिंग एन एथिक ऑफ केयर इन टीचर एजुकेशन: नॉरेटिव एज पेडागोजी टुवर्ड्स केयर *द कंस्ट्रक्टिविस्ट* , *19* (1).

मैकमुलेन,एमबी. बुज़ेली, सी. और यूं, एनआर. (2015). पेडागोजी ऑफ केयर फॉर वेल बीइंग. *रूटलेज इंटरनेशनल हैंडबुक ऑफ़ फिलॉसफीज़ एंड थ्योरीज़ ऑफ़ अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन एंड केयर.* (पृष्ठ 259-268), रूटलेज.

बाली, एम. (2015). पेडागोजी ऑफ केयर- गान मैसिव. *हाइब्रिड पेडगॉजी.*

कोलारिक, ए. और टैजींसका, के. (2022). पेडागोजी ऑफ केयर: बिल्डिंग ए टीचिंग एंड लर्निंग कम्युनिटी. *स्लाविया मेरिडियों नालिस.* 22.

घोलामी, के. (2011). मोरल केयर एंड केयरिंग पेडागोजी: टू डाइमेंशंस ऑफ़ टीचर्स परैक्सिस. *पेडागोजी कल्चर एंड सोसाइटी , 19 (1).* 133-151.

शर्मा, जी.और युखिमेंकोलेसक्रॉर्ट-, ए. (2022). ए फ्रेमवर्क फॉर कल्टीवेटिंग परपज एज ए पेडागोजी ऑफ केयर. *इटालियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी* , *30* (1). 65-74.

ग्लीसन, बी.और मेहता, आर. (2022). ए पेडागोजी ऑफ केयर: क्रिटिकल ह्यूमैनिजिंग अप्रोचएज टू टीचिंग एंड लर्निंग विद टेक्नोलॉजी. *इटालियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी*, *30* (1). 4-17.

https:// news www.jmu.edu/ /cfi/2023/10-17-pedagogy-and-practice-of-care.shtml

https://www.communityplaythings.com/resources/articles/the-pedagogy-of-care

नोडिंग्स, एन. (2013). केयरिंग :ए रिलेशनल एप्रोच टू एथिक्स एंड मोरल एजुकेशन .यूनिवर्कैसिटी ऑफ केलिफोर्निया प्रेस,बर्कले.